प्रमुख जनजाति आदिवासी आंदोलन और विद्रोह

डॉ. कुन्ती साहू , सहायक प्राध्यापक, इतिहास, शासकीय महाविद्यालय गोहपारू जिला शहडोल मध्यप्रदेश
मो.9303658340, 8319338048
इमेल आई.डी. kuntisahu01@gmail.com

.....

सारांश

भारत में अंग्रजी शासन के दवारा वनों के सीमांत में रहने वाल आदिवासियो पर अत्याचार कर उनकी जमीन को हड़पना साथ ही उनके रीति रिवाजो उनके धार्मिक विश्वासो के साथ छेड़छाड़ करना जो लगातार चलता रहा इसके साथ बढ़ा हुआ राजस्व प्रशासनिक असंतोष इन सब के फलस्वरूप जनजातियों ने विद्रोह कर दिया जो भारत के अनेक हिस्सो में रहते थे लगभग सभी जगह के जनजातियों ने विद्रोह किया।

आदिवासी विद्रोह के कारणः-

आदिवासियो के विद्रोह के अनेक कारण थे क्योंकि वह अपने आपको समाज से अलग रखते थे और उनका रहन -सहन समाज से भिन्न था अंग्रेजों ने उन सब पर अपना नियंत्रण स्थापित करने की कोशिश की ईसाई मिशनरियों को इसमें सफलता भी प्राप्त हुई इनके असंतोष का प्रमुख कारण आदिवासियो की जमीन पर कब्जा था यह लोग अपनी ही जमीन पर मजदूर बन गए कुली बन गए खानों में काम करने के लिए उन्हे मजबूर किया गया जनजातियों का परंपरागत काम मछली पालना व खेती करना था उसमें भी जनजाति समुदाय झूम खेती ज्यादा करते थे। जगह बदल बदल कर खेती करना आदिवासी आंदोलन अन्य आंदोलन की अपेक्षा अधिक संगठित हिंसक और उग्र होते थे यह अपने आप को जातिय संगठित करते रहते थे आदिवासियों की एकजुटता प्रशंसनीय थी एक आदिवासी दूसरे आदिवासी पर कभी भी आक्रमण नही करते थे सरकार अंग्रेजी शासन दवारा कबीलो के सरदारों को जमींदार का दर्जा प्रदान कर नई पद्वति लागू कर उनकी परंपराओं को कमजोर किया आदिवासियो के बीच महाजनों व्यापारियों और लगान वसूल करने वाले ऐसे समूह को लादा गया जा बिचौलिए की भूमिका में थे। वन क्षेत्रों पर सरकार का नियंत्रण कर दिया गया। ईंधन पशूचारे के रूप में बद कर दिया गया झूम और पड़खेती पर रोक । उपर्युक्त कारणों से आदिवासियों ने ब्रिटिश सरकार के विरूद्व विद्रोह कर दिया।

आदिवासी आंदोलन का स्वरूप-

आदिवासी आंदोलन को प्रमुख रूप से तीन चरण मे विभाजित किया जाता है।

प्रथम चरण में १७९५ से १८६०

दवितीय चरण में १८६० से १९२०

व्रतीय चरण मे १९२० के बाद

विद्रोह का पहला चरण अंग्रेजी शासन की स्थापना के बाद से ही शुरू होता है अंग्रेजो दवारा आदिवासी क्षेत्रो मे घुसना तथा सुधार कार्य करना इसी के विरूद्व ही आदिवासियों ने विद्रोह कर पुरानी व्यवस्था को लागू करने का प्रयास किया। प्रथम चरण मे राजमहल की पहाड़ियों में स्थित उन जनजातियों का विद्रोह था जिनके क्षेत्रों में अंग्रेजों ने हस्तक्षेप किया इनके दवारा कई अधिकारियों एवं कर्मचारियो की हत्या कर दी गई इनके खूनी हस्तक्षेप से परेशान होकर अंग्रेजी सरकार ने इनसे समझौता कर लिया और उनके क्षेत्र को दामिनी कोल क्षेत्र घोषित किया।

प्रमुख आदिवासी आंदोलन

१ खोंड विद्रोह - इस विद्रोह में हिस्सा लेने वाले हर जाति के लोग तमिलनाडु से लेकर बंगाल और मध्य भारत तक फैले हुए थे उन्होने १८३७ से १८५६ के बीच ब्रिटिश सरकार के विरूद्व विद्रोह किया इस विद्रोह का प्रमुख कारण सरकार दवारा नए करों को लगाना था जो इन आदिवासियों के समझ और सामर्थ्य दोनो से अलग थे। उनको समझाने के लिए कोई नही था जमींदारों और साहूकारों का प्रवेश इनके दर्द को और बढ़ा रहा था। माना जाता है कि खोंड लोग नरबली देते थे। इनके दवारा ही समस्त आदिवासी संगठित हुए लोग इनको भगवान की तरह पूजते थे कालांतर में राधाकृष्ण दंडसेना ने भी विद्रोह में शिरकत कीं।

२ कोल विद्रोह- कोल जनजातियो दवारा ब्रिटिश सरकार के खिलाफ १८३१ ईस्वी में किया यह विद्रोह अंग्रेजों से प्रतिशोध लेने के लिए किया गया यह जाति सदियों से शांतिपूर्वक तरीके से छोटा नागपुर के

पठारी इलाको ं में रहती थी। यह लोग जंगलो को साफ कर तथा बंजर भूमि को खेती करने लायक बना कर खेती करते थे मुगल काल में मुसलमान व्यापारी बड़ी मात्रा में इनके जंगलों की तरफ घुसपैठ करने लगे जिससे इनमें असंतोष पनपने लगा बाद में सिक्ख व्यापारी भी इनके क्षेत्र मे आ गए और इन लोगों ने धीरे धीरे इनकी जमीन पर कब कब्जा कर लिया परंतु यह बहुत धीमी गति से था।

जिससे इनके जीवन पर इसका ज्यादा प्रभाव पड़ा और इन लोगो दवारा किसी भी तरह का प्रतिकार नही किया गया परंतु जब बंगाल में ब्रिटिश शासन की स्थापना की गइ तब से इनके उपर उनका अत्याचार बढ़ गया।महाजनो और साहूकारो दवारा इन पर मनमाना कर लगाया गया इनकी जमीन साहूकारो को दे दी गयी स्थायी बंदोबस्त के कारण एक सबल जमींदार वर्ग सामने आया इनके साथ इनके कर्मचारी भी आए जो मिलकर कोल जनजाति का आर्थिक और शारिरिक शोषण करने लगे लगान समय पर देने पर इन कर्मचारियो दवारा उनकी जमीन निलाम करवा दी जाती थी। साथ ही कोल जाति की बहू बेटियो के साथ जबरदस्ती कर उनका बलत्कार भी किया जाता था। कोलो बेगारी करनी पड़ती थी साथ ही कोल स्त्रियो को जमींदार महाजनो के यहां काम करने के लिए मजबूर किया जाता था। इन सब अत्याचार से परेशान होकर लोगो ने विद्रोह कर दिया क्योंकि पुलिस न्यायालय भी जमींदार का ही साथ देती थीं।

कोल जाति के विद्रोह का नेंव्रत्व बुद्र भगत, जोआ भगत ने किया यह विद्रोह १८३२ से १८३७ तक चलता रहा कोल लोगों ने जमींदारो महाजनों की जमीन और संपत्ति को नष्ट कर दिया सरकारी खजाने को भी लूट लिया न्यायालय और पुलिस थानो में आग लगा दी आंदोलन का उग्र और हिंसक रूप देखकर ब्रिटिश सरकार परेशान हो गई और सेना की टुकडी भेजकर इस आंदोलन को दबाया कोल बड़ी वीरता से लड़े पर बेचारे आधुनिक हथियारों के आगे उनके परंपरागत हथियार काम ना आ सके और भीषण हत्या के बाद ब्रिटिश सरकार इस आंदोलन को कुचलने मे सफल रही पूर्वी भारत में पहली बार सरकार के विद्रोह संगठित रूप से किसी आदिवासी दवारा सशस्त्र आंदोलन किया गया था ओर यह आंदोलन अन्य आंदोलन के लिए प्रेरणा बन गया आंदोलन सफल नही रहा क्योंकि ब्रिटिश सरकार के आधुनिक हथियार का सामना कोल नही कर पाए परंतु उनका बलिदान व्यर्थ नही गया शोषण और अत्याचार के विरूद्व कोल निरंतर लड़ते रहे।

३ संथाल विद्रोह – १८५५ से १८५६ में संथाल आदिवासियों दवारा किया गया था। विद्रोह मे यह विद्रोह सर्वाधिक जबरदस्त था यह विद्रोह मुख्यता भागलपुर से राज महल के बीच केंद्रित था। विद्रोह का प्रमुख कारण भूमि कर बसूली में मनमानी और अधिकारियो का दुर्व्यवहार था। पुलिस का दमन भी इतना ज्यादा रहता था कि संथाल लोगों की शिकायत कोई भी नही सुनता था जमींदार और साहूकार की वसूलीयों मे पुलिस साहूकारो का ही साथ देती थी इसके विरूद्व आदिवासियो का रोष था जो आंदोलन के रूप मे निकल कर सामने आ गया गैर आदिवासी जो आदिवासी के क्षेत्र मे घुसकर उनके साथ ज्यादितिया किया करते थे उनको दिकू नाम से जाना जाता था सिद्वू और कान्हू नाम के दो संथालो ने संथाल विद्रोह को नेव्रत्व प्रदान किया था।ठाकुर जी ने उन्हे आदेश दिया है कि अब वह हथियार उठाकर अत्याचारके खिलाफ खड़े हो जाए संथाल विद्रोह बहुत ही उग्र था सिदधू और कान्हू को पकड़ने के लिए सरकार ने १०००० का इनाम घोषित किया था संथाल विद्रोह के कारण ब्रिटिश सरकार को मार्शल ला लागू करना पड़ा तब जाकर कहीं इस विद्रोह को दबाया जा सका सिद्वू अगस्त १८५५ तथा कान्हू फरवरी १८८६ को पकड़ा गया और मार दिया गया इन सब में जो बात सामने आई वह यह थी कि आदिवासियो किसी भी कीमत पर अपनी स्वंतंत्रता और जमीन पर किसी भी तरह का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं कर सकते थे और निरंतर अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत रहे।

४ खारवाड़ विद्रोह– संथालो के विद्राह के दमन के बाद १८७० में हुए यह विद्रोह भूराजस्व बंदोबस्त के विरूद्व था प्रमुख रूप से यह विद्रोह अंग्रेजी शाषन के विरूद्व था यह अंहिसात्मक आंदोलन था, माना जाता है किइस आंदोलन के नेव्रत्व कर्त्ता भागीरथी माझी थें इस आंदोलन को आगे बढ़ाने का कार्य राजमहल के भगवान दास एवं दुमका के लंबोदर मुखर्जी थे आंदोलन के नेर्तत्व कर्त्ता सरकार के साथ असहयोग नीति का अनुसरण किया खुद को बॉसी गांव का राजा घोषित कर जमीदारों और सरकारों के लगान ना देकर

खुद लगान प्राप्त करने की पद्वति चलाई बाद मे गांधीजी ने इनका अनुसरण किया। भागीदारी माझी आदिवासियों के बीच बाबा के नाम से चर्चित थे।

५ **भील विद्रोह** –राजस्थान के बांसवारा सुंठ और डूंगरपुर क्षेत्रो के भीलो के दवारा गोविंद गुरू के सुधारो बंधुआ मजदूर से प्रेरित होकर विद्रोह किया गया भील स्वभाव से स्वतंत्रता एवं शांति प्रिय जाति थी अपनी परंपराओ एवं रीति रिवाजो में कानूनी हस्तक्षेप पसंद नहीं करते थे १८१८ इसवी में भीलों के मदयपान पर नियंत्रण एवं अंधविश्वास को दूर करने के लिए सुधार किए गए इसे भीलो ने अपनी परंपराओ का उल्लंघन मानकर विद्रोह कर दिया १९१३ तक यह आंदोलन इतना शक्तिशाली हो गया कि विद्रोहियो ने भी राज्य की स्थापना हेतु प्रयास शुरू कर दिया ब्रिटिश सेना ने काफी प्रयासो ं के बाद विद्रोह को कुचला।

६ नैकदा आंदोलन– भारत मे अनेक हिस्सो में रहने वाले आदिवासियो ने १९ वी सदी में संगठित होकर ब्रिटिश सरकार के विरूद्व कई छापामार लड़ाईया लड़ी नैकदा मध्यप्रदेश गुजरात में वनवासी नैकदा आदिवासीयो दवारा चलाया गया इस आंदोलन के नेता अपने धार्मिक आस्था में अधिक विश्वास करते थे और अंग्रेजी शासन का विरोध करते थे और अपने क्षेत्र मे धर्म राज्य स्थापित करना चाहते थे।

७ कोया विद्रोह– आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी क्षेत्र से शुरू हुआ उड़ीसा के मलकागिरी क्षेत्र को भी प्रभावित किया इस विद्रोह का केंद्र बिंदु चोडवरम का रम्पा प्रदेश था कंपनी दवारा इन आदिवासियो के उपर अत्यंत अत्याचार किए जाते थे जिससे उनमे अत्यधिक गुस्सा था जो आंदोलन के रूप मे बाहर निकला जंगलो मे उनके पंरपारिक अधिकारो का समाप्त करने पुलिस की ज्यादितियो साहूकारो दवारा शोषण ताड़ी के उत्पादन पर कर आदि के विद्रोह मे हुआ १८७९ से १८८० मे किया कोयाविद्रोह को टोम्मा सोरा ने नेर्तत्व प्रदान किया कोया विद्रोह के दमन के लिए अंग्रेजी सरकार ने मद्रास इनफैन्ट्री के ६ रेजीमेट का सहयोग लिया था। १८८६ में कोया विद्रोह ने राजा अनन्तस्यार के नेर्तत्व में रामतनू का गठन कर जयपुर के तत्कालीन शाषक से अंग्रेजी राज्य को पलटने के लिए सहायता मांगी।

८ मुंडा विद्राह– १८९३ से १९०० के बीच मुंडा के नेव्रत्व में हुआ यह विद्रोह उस समय अवधि का सबसे अधिक चर्चित विद्रोह था विद्रोह का कारण मुडो की पारंपरिक भूमि व्यवस्था खॅटीकटटी या मुंडारी का जमींदार या व्यक्तिगत भूमिस्वामित्व वाली भूमि व्यवस्था में परिवर्तन के विरूद्व मुंडा विद्रोह की शुरूआत हुइ।लेकिन कालांतर में बिरसा ने इसे धार्मिक राजनीतिक आंदोलन का रूप प्रदान कर दिया बिरसा मुंडा को उल्गुलान महान हलचल और इनके विद्रोह की उल्गुलन महा विद्रोह के नाम से जाना जाता है १८९५ में बिरसा ने अपने को भगवान का दूत घोषित किया और हजारो मुंडाओ का नेता बन गया उसने कहा दिकुओ गैरआदिवासियो से हमारी लड़ाई होगी और उनके खून से जमीन इस तरह लाल होगी जैसे लालझंडा १९०० के प्रारंभ में बिरसा को गिरफतार कर लिया गया जहा जेल में ही उसकी म्रत्यु हो गयी।

९ ताना भगत आंदोलन– इस आंदोलन की शुरूआत दवितीय विश्व युद्व के बाद छोटा नागपुर बिहारमे हुई इस आंदोलन को भगत आंदोलन इसलिए कहा गया है क्योंकि इसका नेव्रत्व आदिवासियो के बीच उन लोगो ने किया जो फकीर या धर्माचार्य थे आदिवासियो का यह आंदोलन सांस्कृतिक आंदोलन था अपने धार्मिक सामाजिक परंपराओ को बचाने का प्रयास किया जा रहा था इन आदिवासी आंदोलनकारियो के बीच गांधीवादी कार्यकर्ताओ ने अपनी रचनात्मक कार्यो के साथ इनका सहयोग किया १९२० के दशक में ताना भक्तो ने कांग्रेस के नेतत्व में शराब की दुकानो पर धरना देकर सत्याग्रह किया १९२० के दशक मे ताना भक्तो ने कांगेस के नेतत्व मे शराब की दुकानो पर धरना देकर सत्याग्रह और प्रदर्शनों मे हिस्सो लेकर भारत के राष्ट्रिय आंदोलन में संक्रिय भागीदारी की इस आंदोलन को जवरा भगत बलराम भगत देव मेनिया भगत ने अपना नेतत्व प्रदान किया जवरा भगत आंदोलन लगान कीदरों मं उची वद्वि और चौकीदारी कर के विरूद्व भी आंदोलन किया।

१० चेंचू आंदोलन– चेंचू विद्रोह १९२१ से १९२२ में हुआ आंध्रप्रदेश के गंटूर जिले मे १९२० में असहयोग आंदोलन के समय शक्तिशाली जंगल सत्याग्रह के रू में शुरू हुआ चेंचू आदिवासी आंदोलनकारियो ने वेंकटपया जैसे नेताओ से संपर्क स्थापित किया दिसंबर १९२७ में गांधीजी ने भी क्षेत्र का दौरा किया १९२१ से १९२२ मे मोतीलाल तेजावत के नेव्रत्व मे भील विद्रोह ने उग्रता के कारण पूरे देश

मे चल रहे अन्य आंदोलन भी प्रभावित हुए जिससे कांग्रेस ने इस विद्रोह से अपने रिश्ते की बात को नकार दिया।

११ रम्पा विद्रोह- आंध्रप्रदेश के गोदावरी जिले के उत्तर मे स्थित रम्पा क्षेत्र में हुआ आदिवासियो का यह विद्राह साहूकारो के शोषण और वन कानून के विरू हुआ १९२२ से १९२४ के बीच हुए रम्पा विद्रोह के नेता अल्लूरी सीताराम राजू थे जो गैर आदिवासी नेता थे इन्होने ज्योतिषी और शारिरिक उपचारसंबंधी विशेष शक्तियोसे युक्त होने का दावा किया सीताराम राजू को गांधी के असहयोग आंदोलन से प्रेरणा प्राप्त हुई लेकिन यह आदिवासी कल्याण हेतु हिंसा को आवश्यक समझते थे १९२४ में सीताराम राजू की हत्या कर विद्रोह को कुचल दिया गया।

१२ खासी विद्रोह- कंपनी दवारा खासी और जयंतिया पहाड़ी पर अधिकार के बाद ब्रहपुर और सिलहट को जोड़ने के लिए एक सड़क निर्माण की योजना बनी जिसके लिए अनेक अंग्रेज और बंगाली उस क्षेत्र मे आए यह खासी जनजाति के लोगो के साथ दुर्व्यवहार कर जबरदस्ती उनसे काम ले रहे थेउनकी जमीन पर कब्जा कर लिया गया था। राजा वीर सिंह के नेर्तत्व मे खासी जनजाति ने विद्रोह किया था।परंतु आंदोलन असफल रही १८३३ के प्रारंभ मे इसे कुचल दिया गया।

१३ अहोम आंदोलन – असम के अहोम अभिजात वर्ग के लोगो दवारा बर्मा युद्व के बाद कंपनी के उनके क्षेत्रो से वापस ना होने पर १८२८ मे अपने नेता गोमधर कुंवर के नेर्तत्व में विद्रोह किया सरकार ने अहोम को शांत करने के लिए समझौता किया।

१४ नागा आंदोलन- नागा आंदोलन की शुरूआत युवा रोंग मेंई जदीनांग ने किया इस आंदोलन का उददेश्य सामाजिक एकता लाना बेढंग रीति रिवाजो को खत्म करना तथा प्राचीन धर्म को पुनर्जीवित करना आदि २९ अगस्त १९३१ को सरकार दवारा जदीनांग को फांसी दे देने के बाद इस आंदोलन को १७ वर्षिय नागा महिला गैडिनलियु ने अपना नेत्रत्व प्रदान किया गैडनलियु ने अपने आदिवासी आंदोलन को गांधीजी के सविनय अवज्ञा आंदोलन से जोड़ा और कष्टकारी करो और कानून की अवज्ञा करने का आदेश दिया जवाहर लाल नेहरू और आजाद हिंद फौज ने गैडिनलियु को रानी की उपाधि से सम्मानित किया रानी ने जदीनांग के धार्मिक विचारो क आधार पर हेकिपंथ की स्थापना की।

निष्कर्ष- समस्त आदिवासी आंदोलन इसलिए हुए क्योंकि अंग्रेज और जमींदार साहूकार मिलकर उनका आर्थिक शारिरिक शोषण करते थे। आदिवासियो से उनकी जमीन छीन ली गई उनके रीति रीवाजो पर प्रहार किया गया उनकी स्वतंत्रता पर प्रतिबंधलगा दिया गया जिससे देश के कोने कोने के समस्त आदिवासियों ने अपनी अपनी क्षेत्र मे आंदोलन किया, दुर्भाग की बात यह है कि कहीं भी पूरी तरह से सफलता प्राप्त नही कर सके या यू कहे कि भारतीय समाज जा स्वयं बिखरा था इनकी मदद नही कर सका और ना ही यह स्वयं भी एकजुट हो सके, अशिक्षा,संचार की कमी,समाज से कटाव के कारण यह समस्त आंदोलन आंशिक रूप से ही सफल रहे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- बी.एस.एल.ग्रोवर.अलका मेहता यशपाल-आधुनिक भारत का इतिहास
- बिपिन चंद्रा-आधुनिक भारत का इतिहास
- किरण कम्पटीशन टाइम्स-भारतीय इतिहास
- जगन्नाथ प्रसाद मिश्र-आधुनिक भारत का इतिहास